

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्ताशीतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে সপ্তাশীতিতমং দশকম্ ॥

কুচেলোপাখ্যানম্

কুচেলনামা ভরতঃ সতীর্থ্যতাং

গতঃ স সান্দীপনিমন্দিরে দ্বিজঃ।

ৎরদেকরাগেণ ধনাদিনিষ্পৃহো

দিনানি নিন্যে প্রশমী গৃহাশ্রমী ॥ 87.1 ॥

সমানশীলাহপি তদীয়রল্লভা

তথৈব নো চিত্তজয়ং সমেযুষী।

কদাচিদুচে বত বৃত্তিলঙ্ঘয়ে

রমাপতিঃ কিং ন সখা নিষেব্যতে ॥ 87.2 ॥

ইতীরিতোহয়ং প্রিযযা ক্ষুধার্তযা

জুগুন্সমানোহপি ধনে মদারহে।

তদা ত্ৰদালোকনকৌতুকাদ্যযৌ

রহন্ পটান্তে পৃথুকানুপাযনম্ ॥ 87.3 ॥

গতোহয়মাশ্চর্যমযীং ভরৎপুরীং

গৃহেষু শৈব্যভরনং সমেঘিরান্।

প্রিষ্য রৈকুঠমিরাপ নিবৃত্তিং

তরাতিসম্ভারনযা তু কিং পুনঃ ॥ 87.4 ॥

প্রপূজিতং তং প্রিযযা চ বীজিতং

করে গৃহীৎরাহকথযঃ পুরাকৃতম্।

यदिक्नार्थं गुरुदारचोदितै -

रपर्तुर्षं तदमर्षि कानने ॥ 87.5 ॥

त्रपाजुषोहस्मां पृथुकं बलादथ
प्रगृह्य मुष्टौ सकृताशिते व्रथा।

कृतं कृतं नन्वियतेति संद्रमा -

द्रमा किलोपेत्य करं रुरोध ते ॥ 87.6 ॥

भक्तेषु भक्तेन स मानितस्त्रया

पुरीं रसन्नेकनिशां महासुखम्।

वतापरेद्युर्द्रिणं रिना यथौ

रिचिद्रूपसुत्रं खल्लनुग्रहः ॥ 87.7 ॥

यदि ह्याचिष्यमदास्यदच्युतो

रदामि भार्यां किमिति ब्रुजन्नसौ।

व्रदुक्तिलीलास्मितमग्नधीः पुनः

क्रमादपश्याग्निदीप्रमालयम् ॥ 87.8 ॥

किं मार्गरिभ्रंश इति भ्रमन् ऋणं

गृहं प्ररिष्टः स ददर्श रल्लभाम्।

सथीपरीतां मणिहेमभूषितां

बुबोध च व्रत्करुणां महाद्भुताम् ॥ 87.9 ॥

स रत्नशालासु रसन्नपि स्वयं

समून्मदुक्तिभरोहमृतं यथौ।

व्रमेरमापुरितभक्तुराञ्जितो

मरुत्पुराधीश हरस्व मे गदान् ॥ 87.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्ताशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥